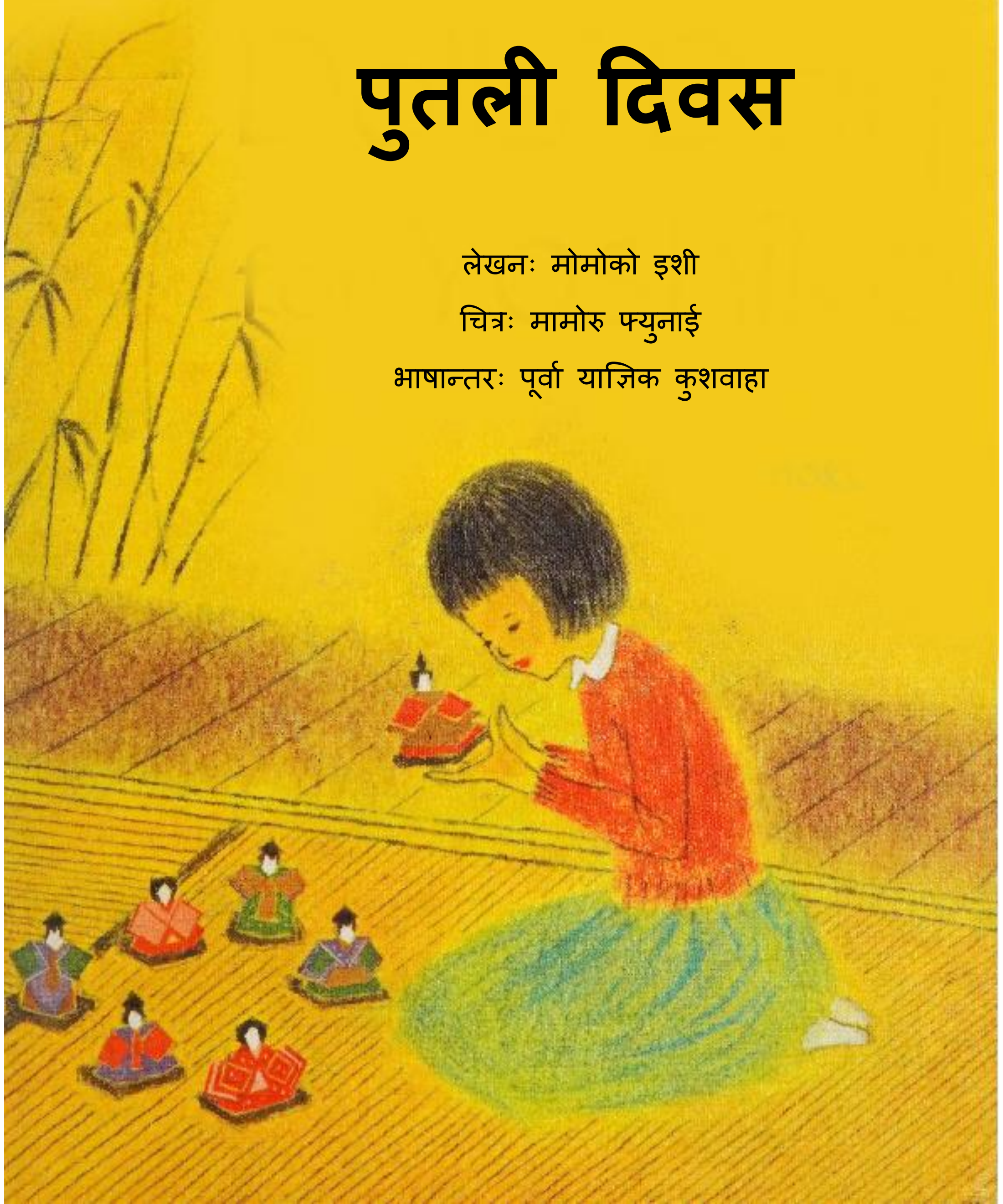
योशिको का पुतली दिवस

लेखनः मोमोको इशी
चित्रः मामोरु फ्युनाई
भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



योशिको का पुतली दिवस

लेखनः मोमोको इशी
चित्रः मामोरु फ्युनाई
भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



भूमिका

जहाँ तक मेरी याद्दाश्त जाती है, जापान में बसन्त लड़कियों के लिए खुशी का मौसम होता है। जब मैं छोटी थी रिवाज़ यह था कि परिवार के मित्र और रिश्तेदार छोटी लड़कियों के उनके पहले आड़ू पुष्प उत्सव पर, जो मार्च में मनाया जाता था, ओ-हीना पुतलियाँ भेंट करते थे। अगर वह बच्ची अपने माता-पिता की पहली बेटी होती तो उसे शाही पुतलियों और उनके दरबारियों का पूरा सेट उसके नाना-नानी दिया करते थे। पर पहली बेटी के बाद पैदा होने वाली बेटियाँ इतनी खुशकिस्मत नहीं हुआ करती थीं। उन्हें अधिक साधारण और कम महत्वपूर्ण पुतलियाँ दी जाती थीं, जिनको दरबार के बाहर ही जगह मिलती थी।

मैं अपने माता-पिता की पाँचवीं बेटी थी, इसलिए जब तक मैं इस जश्न के बारे में समझने लगी तब तक मेरे परिवार में इतनी ओ-हीना पुतलियाँ हो चुकी थीं, कि उन्हें सजाने के लिए हमें छत तक आले लगाने पड़ते थे। साल भर बाद जब कागज़ में लिपटी पुतलियों को निकाला जाता था, तो हम उत्साह से भर जाते थे। हमारे छोटे-छोटे हाथ उन्हें बड़ी सावधानी से निकालते थे ताकि एक भी न टूटे। मुझे लगता है कि यह हम बच्चियों को चीज़ों को सावधानी से बरतना सिखाने का एक तरीका भी था। ताकि सालों-साल उन्हें सहेज कर रखा जा सके।

पुतलियों के उत्सव का रिवाज़ सदियों पहले शुरु हुआ था। पहले-पहल माता-पिता शायद अपने ही बच्चों की, हाथों से बनी अनगढ़ पुतलियाँ बना दरी पर बिछाते होंगे। उनके स्वास्थ्य की कामना करते होंगे। पर ताकागुवा युग (1603-1867) के मध्य तक शहरों के लोग इस उत्सव को ठीक वैसे मनाने लगे जैसे मेरा परिवार इसे मनाता था।

तकरीबन सात साल पहले मैंने अपने घर में बच्चों के लिए एक किताबघर खोला। क्योंकि तब बसन्त था, मेरी एक सहेली ने ओ-हीन पुतलियों का एक पूरा सेट हमारे किताबघर के लिए भेजा ताकि बच्चे उनका मज़ा ले सकें। जब मैं पुतलियों को परंपरागत तरीके से आलों में रख सजाने लगी, मेरे दिमाग में कुछ घुमड़ने लगा। मेरी सहेली की ओ-हीना पुतलियों ने जो स्मृतियाँ जगाईं उसने इस कहानी का रूप लिया।

उम्मीद है कि जिन बच्चियों को गुड़ियों से खेलने का शौक है, वे इस कहानी का मज़ा लेंगी।

एम. आई.
टोक्यो, जापान
3 मार्च 1966

फरवरी के एक गुनगुने दिन योशिको हड़बड़ाती हुई घर लौट रही थी। उसका स्कूल का बस्ता उसकी पीठ को थपकियाँ दे रहा था। चौड़े राजमार्ग को पार करते समय उसकी साँस फूलने लगी थी। पर वह बिना रुके आगे बढ़ती रही। उसे माँ को एक बेहद ज़रूरी बात जो बतानी थी।

उसने फुर्ती से बाहर का फाटक खोला और घास पर जड़े कदम-पत्थरों को तीन कुदानों में पार कर, वह घर के बगल वाले बरामदे में पहुँची। उसने जल्दी से काँच का दरावाज़ा खोला। माँ सिलाई मशीन पर बैठी थीं। अमूमन वे काम में इस कदर मशगूल रहतीं थीं कि वे बड़े ही नीरस तरीके से बस "हैलो" ही कहतीं थीं।





पर आज उनके पैर और हाथ अचानक रुक गए। वे मशीन के पीछे लगी एक कुर्सी पर बैठी थीं। उन्होंने आँखें उठाईं और मुस्कुरा दीं। मानो उन्हें भी एक खुफ़िया बात बतानी हो। वे बोलीं, "योशिको, बूझो तो ज़रा मैंने कुछ देर पहले क्या देखा?"

योशिको चौंक गई, क्योंकि ठीक यही सवाल वह माँ से पूछने वाली थी। पर माँ का मिजाज़ अच्छा देख वह खुश हो गई। उसने पूछा, "क्या था, मुझे बताओ ना?"

"एक बुलबुल! वहाँ उस चिनार के पेड़ पर।"

माँ ने बिन पत्तों वाले पतले से पेड़ की ओर इशारा किया जो बाँस से बनी मुंडेर के पास खड़ा था। मुंडेर उनके और पड़ौसियों के बाग को जुदा करती थी।

"सच में?"

"हाँ, पर पता है, वह ठीक से गा नहीं पाई। उसने सिर्फ 'चीं चीं' ही की। लगा मानो उसे भी पता हो कि वह अच्छा नहीं गा रही है। वह फिक्रमन्द सी लग रही थी। उसे देखना इतना मज़ाकिया था। मैं चाह रही थी कि वह तुम्हारे घर लौटने तक बैठी रहे, सो मैंने अपनी मशीन बहुत ही धीमे-धीमे चलाई। पर वह बाँस के झुरमुट की ओर उड़ गई।"

"इस साल वह बड़ी जल्दी आई है ना? पिछले साल तो वह तीन मार्च को आई थी . . .?"

"तुम्हें तो बिलकुल सही याद है," माँ ने कहा। उसने योशिको को गंभीर नज़र से देखा।

"बेशक . . ."

तीन मार्च की तारीख़ को याद रखना योशिको के लिए आसान था। उसी दिन न केवल लड़कियों का पुतली उत्सव होता था बल्की वही उसके पिता की मौत का दिन भी था। दो साल पहले ही तो उसके पिता की मौत हुई थी। वे मरने से पहले बुलबुल के आने का इन्तज़ार करते रहे थे। वे अक्सर पूछते, "क्या बुलबुल के गाने का समय नहीं हो गया?" पर वे उसे गाते सुने बिना ही चले गए थे।

इस घटना के साल भर बाद, यानी पिछले साल 3 मार्च को योशिको सुबह बहुत ही जल्दी जाग उठी थी। उसके बिस्तर के पास वाले बिस्तर से उसकी माँ ने धीमी आवाज़ में पूछा, "तुम जाग गई हो योशिको?"

“हाँ।”

इसके बाद दोनों ने एक भी शब्द नहीं बोला। योशिको और उसकी माँ शायद एक ही बात सोच रहे थे।

तब अचानक उन्हें चहचहाने की आवाज़ आई, “क्यो-क्यो-हो-ओ-हो-हे-क्यो”। यह आवाज़ बाग से आ रही थी।

“ओह!” माँ धीमे स्वर में बोली ओर बाग की ओर दौड़ीं। उन्होंने परदे का कोना उठाया और बाहर झांकने लगीं। योशिको भी जल्दी से आई और झांकने लगी। उन्हें एक लाल-भूरी चिड़िया, पड़ौसियों के घर से उनके घर तक लटकते हुए बाँसों पर कूदती दिखी। वह अपनी पूंछ भी हिलाती जा रही थी। योशिको और उसकी माँ रात के कपड़े पहने हुए थे।



वे ठंड में कांपते बुलबुल को कुछ देर देखते रहे। लग ऐसा रहा था मानो योशिको के पिता उन्हें देखने इस रूप में लौटे हैं। यह इतना अजीब था कि योशिको का दिल तेज़ी से धड़कने लगा।

यह वाकया पिछली 3 मार्च का था। अब फिर से मार्च की तीसरी तारीख़ आने ही वाली थी।

"इस साल ज़बरदस्त ठण्ड पड़ी है, सो हो सकता है कि बसन्त भी जल्दी ही आ जाए," माँ ने मशीन से उठते हुए कहा। "दुनिया कितनी भगदौड़ वाली और अधीर हो गई है - प्रकृति और इन्सान भी। मिसाल के तौर पर इस पोशाक को ही लो, ऐसे कितने ही ग्राहक हैं, जो इसे बनवाने को बेताब हैं। वे चाहते हैं कि मैं झटपट इसे बना दूं।"

जिस पोशाक की बात हो रही थी वह चमकदार नीले रेशम की थी, माँ उसी पर काम कर रही थीं।

"योशिको जल्दी से दरवाज़ा बन्द कर दो। काफ़ी ठण्ड है। चलो अपन चाय पीते हैं। मैं सुबह से बिना रुके काम करती जा रही हूँ। बेहद थक चुकी हूँ।"

योशिको ने काँच का दरवाज़ा बन्द किया और माँ के सामने आ खड़ी हुई। वे खड़े हो अंगड़ाई ले रही थीं। उसने हिम्मत जुटाई और जो वह सोचती रही थी, वह कहने लगी।

"मैंने आज कुछ बहुत ही सुन्दर देखा, सोचो क्या माँ?"

"पता नहीं क्या देखा होगा। तुम्हें इतनी सारी चीज़ें पसन्द आती हैं जिनका मुझे पता ही नहीं होता।"

"ओ-हीना पुतलियाँ!" माँ रसोई की ओर मुड़ी ही थीं कि योशिका ने आगे कहा, "मैंने उन्हें आज ही सानको डिपार्टमेंट स्टोर में देखा।"

“तो?” माँ ने बिना पलटे पूछा। उन्होंने गैस के चूल्हे पर चाय की केतली चढ़ा दी।

कोई फायदा नहीं . . . योशिको ने सोचा।

वह बहुत निराश हो गई। उसने अपना बस्ता धड़ से नीचे पटका और तातामी (चटाई) पर लेट गई। वह बखूबी जानती थी कि माँ ओ-हीना पुतलियों के बारे में बात क्यों नहीं करना चाहती थीं। इसलिए क्योंकि वे उन्हें सानको डिपार्टमेंट स्टोर से खरीदना ही नहीं चाहती थीं। उनकी बचपन वाली पुतलियाँ इतनी खूबसूरत थीं कि उन्हें योशिको के लिए कोई पसन्द ही नहीं आती थी।

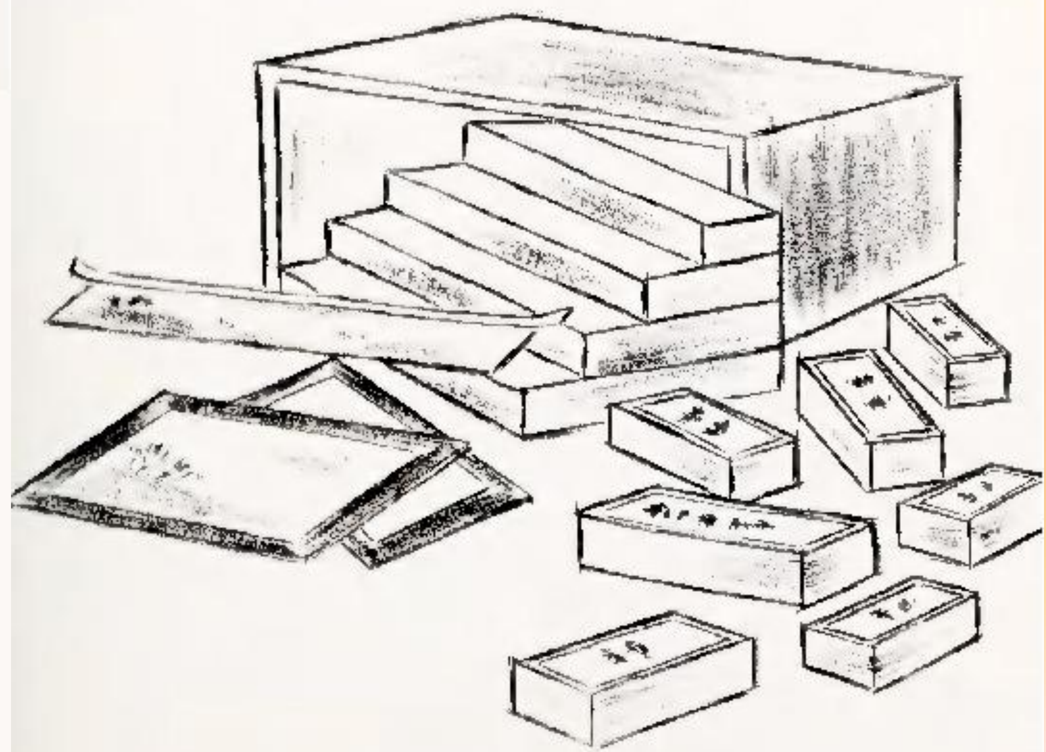
माँ की ओ-हीना पुतलियाँ! जब योशिको एकदम नन्ही-सी थी तब से ही उसने माँ की पुतलियों का बखान सुना था। वे पुतलियाँ माँ को उनकी नानी, यानी योशिको की पर-नानी ने, माँ के पहले पुतली उत्सव पर दी थीं।



लकड़ी से बनी ये पुतलियां पर-नानी के पड़ौस में रहने वाले पुतली कारीगर ने नन्ही सी माँ के लिए बड़ी ही सावधानी से तराशी और बनाई थीं।

उन पुतलियों को एक बीस इंच लम्बे और अठारह इंच चौड़े बक्से में रखा जा सकता था। वह बक्सा काँच का नहीं था, जैसे योशिको ने दुकानों में देखे थे।

पहली नज़र में वह ललाई लिए हुए भूरी लाख से पुता बक्सा साधारण लगा था। पर उसकी एक तरफ सरकने वाले दरवाज़े थे। उन्हें हटाने पर, उनके पीछे कोहरे से ढ़के पहाड़ और वादियों के चित्र दिखते थे। दरवाज़ों को हटते ही बक्से के अन्दर रखे आले नज़र आते थे, जिन पर पुतलियों को सजाया जा सकता था।

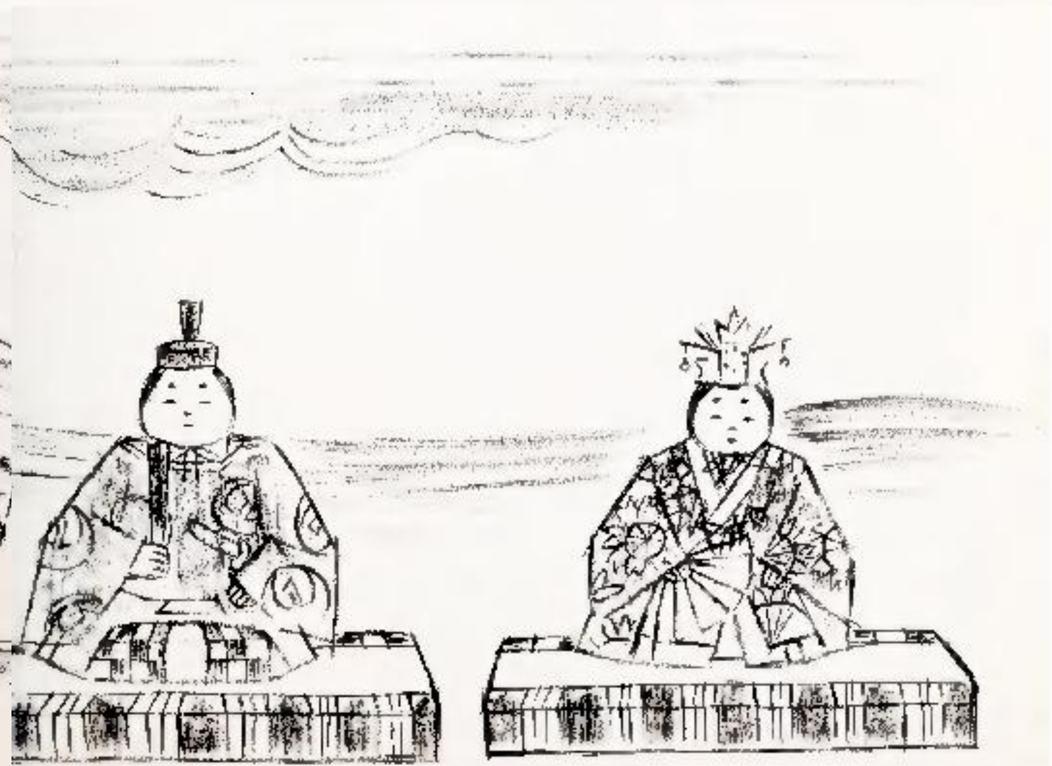


इन आलों को सावधानी से हटाने पर आपको अन्दर की खाली जगह में सात छोटे डब्बे दिखते थे, इनमें कुछ बाकी से बड़े थे। एक लकड़ी का चित्रपट था जिसकी चौड़ाई आलों जितनी थी।

अगर आप आलों को बक्से के ऊपर जमा देते तो वह चित्रपट उनके पीछे ठीक से टिक जाता था। सुन्दर दृश्य वाला वह चित्रपट सबसे ऊपर वाले आले पर रख आप पुतलियों को सजा सकते थे।

सबसे बड़े डब्बे पर उकेर कर लिखा गया था "तराशे गए राजकुमार और राजकुमारी"। इस डब्बे में पतले कागज़ में लिपटी सबसे महत्वपूर्ण पुतलियाँ रखी होती थीं। उन्हें शाही पोशाक में उकेरा और रंगा गया था। उनका मुकुट तक। राजकुमारी के दाहिने हाथ में पंखा था और राजकुमार के बगल में थी एक तलवार। ज़ाहिर ही था कि उन्हें सबसे ऊपर वाले आले में रखा जाता था।





दूसरे बक्से पर लिखा था ''राजकुमारी की तीन सेविकाएं'' इन पुतलियों के गोलमटोल गाल थे और वे शान्त दिखती थीं। तीनों पीले रंग का किमोनो पहने थीं, जिन पर चैरी के फूल बने हुए थे। वे किमोनो के नीचे लाल घाघरे पहने थीं। उन्हें अपने हाथ गोद में रखे बैठी दिखाया गया था। इन्हें दूसरे आले पर रखा जाता था।

खोले जाने वाले अगले बक्से पर ''पाँच साज़िन्दे'' उकेरा हुआ था। उनकी पोशाकें आज के साज़िन्दों जैसी नहीं थीं। इसलिए क्योंकि माँ की पुतलियाँ हज़ारों साल पहले के रिवाज़ के हिसाब से बनाई गई थीं। उन पुतलियों को नारा पुतलियाँ कहा जाता था। इन साज़िन्दों में से एक के मुँह में माउथ-आर्गन जैसा वाद्‌य था, दूसरे के पास एक बाँसुरी थी, और तीसरे के पास लम्बी कोरियन बाँसुरी थी। और आख़िरी दो पुतलियों के पास एक सपाट नगाड़ा बना था। एक नगाड़ा लौ के आकार के फ्रेम में जड़ा था।



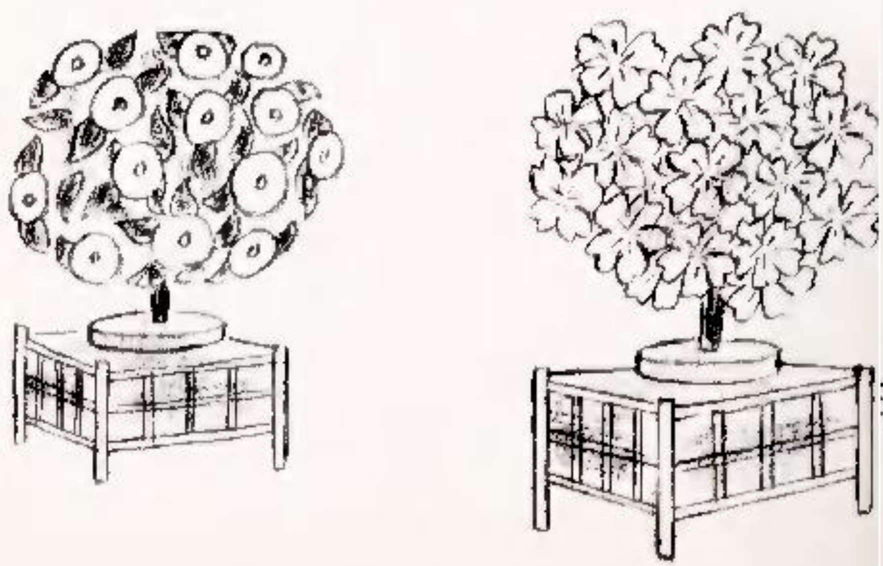
सबसे निचला आला "दो मंत्रियों" के लिए था। उनमें से जो जवान मंत्री था वह लाल पोशाक पहने था। उसे दाहिनी ओर बैठाया जाता था। वृद्ध मंत्री की लम्बी सफेद दाढ़ी थी और उसे बायीं ओर रखा जाता था। दोनों मंत्रियों के पास तलवारें थीं ओर पीठ पर तरकश, जिसमें तीर थे। इनके साथ शाही दरबार पूरा हो जाता था। यह जताने के लिए उनके सामने रेलिंग बनी हुई थी, पर बीच का हिस्सा खुला हुआ था। एक छोटी सी सीढ़ी से उतर कर काल्पनिक शाही बाग में उतरा जा सकता था। सीढ़ी के दोनों ओर एक-एक पहरेदार बैठाए जाते थे। वे नीली पतलून, सफेद कमीज़ और काली टोपियाँ पहने थे। उनके नंगे पैर मानो सर्दी से कुछ लाल हो गए नज़र आते थे।

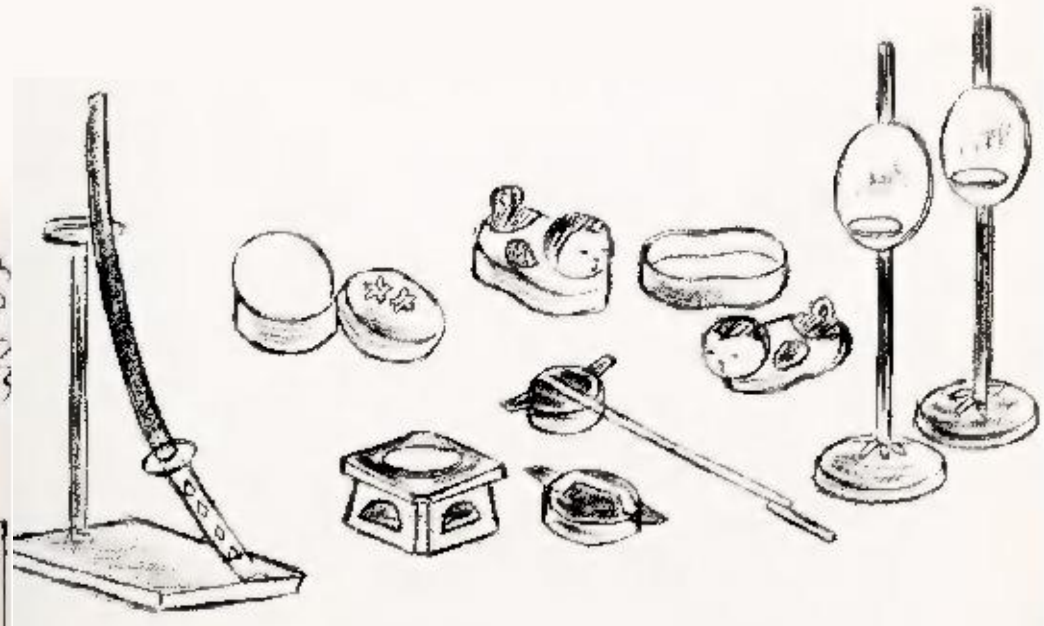


अगला बक्सा सबसे छोटा था। उस पर “दो पेड़” लिखा था। बायीं ओर चैरी का पेड़ रखा जाता था और दाहिनी ओर संतरे का। अब खोलने को एक आख़िरी बक्सा बचता था। उस पर लिखा था “घरेलू सामान।” माँ बताती थीं कि उन्हें इस आखिरी बक्से को खोल बेहद खुशी होती थी, क्योंकि उसमें तमाम छोटी-छोटी चीज़ें थीं, जो ओ-हीना पुतलियों के काम आती थीं।

सबसे पहले थीं राजकुमार ओर राजकुमारी की चीज़ें। एक लाल बक्से में रखा राजकुमारी का एक छोटा हाथ दर्पण था, और राजकुमार की तलवार को रखने के लिए एक रैक। दो छोटे तेल वाले लालटेन थे जिन्हे उनके अगल-बगल रखा जाता था। दो खोखले खिलौना कुत्ते थे, जिनमें शाही जोड़ी के सजने का सामान और तावीज़ रखे जा सकते थे।

सेविकाओं वाले दूसरे आले के लिए शराब की बोतलें रखने की जगह और एक प्याला था। पाँच साज़िन्दों वाले आले में दो ही चीज़ें रखी जाती थीं - दो नगाड़े। बाकी साज़िन्दों के साज़ तो उनके हाथों में ही थे।





दोनों मंत्रियों को कुछ भी नहीं चाहिए होता था, इसलिए उन दोनों के बीच काफी खाली जगह थी।

उस जगह को राजकुमार और राजकुमारी के भोज से भरा जाता था - मुर्गा-मुर्गी, मछली, चावल और खाने का दूसरा सामान।

जब सब कुछ इस तरह आलों पर सजा कर रख दिया जाता था, तो ओ-हीना पुतलियाँ निहारने और उनका मज़ा लेने के लिए तैयार हो चुकी होती थीं। पंद्रह दिन बाद वे आलों से उतार कर बक्सों में बन्द कर दी जातीं थीं। उन्हें वापस रखने का क्रम उन्हें निकालने के क्रम से ठीक उलटा होता था।

मतलब सबसे पहले "घरेलू सामान" और सबसे आख़िर में राजकुमार और राजकुमारी। तब सातों छोटे-बड़े डब्बे लाख से पुते बक्से के पीछे जमाए जाते थे। उनके ऊपर चित्रपट रखा जाता था। इसके बाद सारे आलों को धीरे से अन्दर रखा जाता था। तब सरकने वाले दरवाज़ों को अगले साल तक के लिए बन्द कर दिया जाता था।

माँ के पास इतनी अद्भुत पुतलियाँ इसलिए थीं, क्योंकि उनके पिता का तबादला अपनी कम्पनी के दूसरे शहरों बने दफ्तरों में होता रहता था। सो बचपन में माँ, अपनी माँ और पिता के साथ दूसरे शहरों में रहने जाती थी।

जब माँ की नानी को यह पता चला कि उनकी नवासी, यानी मेरी माँ की किस्मत में देश भर में भटकना लिखा है, वे चिन्ता में पड़ गईं। सोचने लगीं कि जब उसके पहले पुतली उत्सव का समय आएगा तब किस तरह की पुतलियाँ सबसे अच्छी रहेंगी। बड़ी ओ-हीना पुतलियों को तो जगह-जगह ले जाना परेशानी पैदा करेगा। वे मिट्टी से बनी होंगी तो टूट-फूट जाएंगी। सो अच्छा होगा कि लकड़ी से तराशी पुतलियाँ ही उसे दी जाएं। इससे बच्ची जहाँ भी हो, हर बसन्त उन्हें निकाल कर पुतली उत्सव मना सकेगी।

जैसा माँ की नानी ने उम्मीद की थी, उनकी दी गई पुतलियाँ माँ के साथ हर जगह गईं। जब भी मार्च का महीना आता वे सुडौल गालों वाली सुन्दर पुतलियाँ निकाली जातीं। करीने से सजाई जातीं। और मेरी नन्ही माँ आधे महीने तक उनसे खेला करती। तबादला होते रहने के कारण बचपन में उनकी सहेलियाँ भी ज़्यादा नहीं थीं, सो ये पुतलियाँ ही उनकी सबसे बेहतरीन सखियाँ थीं।





इतना ही नहीं नई जगह जाने पर जान-पहचान बनाने में भी वे मदद करती थीं। क्योंकि उनकी माँ आस-पड़ौस की छोटी लड़कियों को पुतली दिवस पर बुलातीं और उन्हें भी पुतलियों से खेलने देतीं। लड़कियों को इसमें बहुत मज़ा आता था।

समय गुज़रने के साथ माँ को सचमें लगने लगा था कि ये पुतलियाँ ही उनके बचपन की सबसे प्यारी सहेलियाँ थीं। वे योशिको को अक्सर बताती थीं कि बचपन में ओ-हीना पुतलियाँ ही उनकी जीती-जागती सहेलियों-सी थीं।

“माँ आपको यह सब इतनी अच्छी तरह से कैसे याद रहा है?” योशिको कभी माँ से सवाल करती।

"अरे, साल-दर-साल, जहाँ तक मुझे याद है, मैं उन्हें निकालती, तब उन्हें वापस रखती। तकरीबन बीस बार मैंने यह सब बिलकुल अकेले ही किया था," माँ ने तब जवाब दिया था।

26 मई 1945 में हवाई बमबारी से जब उनका घर जल कर तहस-नहस हुआ, वे पुतलियाँ भी राख हो गईं थी। यह तब हुआ जब वे दो साल पहले ही फिर से टोक्यो में रहने लौटी थीं, जहाँ माँ पैदा हुई थीं।

तब से घर में एक भी ओ-हीना पुतली नहीं रही थी। क्योंकि माँ के दिलो-दिमाग में उनकी नानी की दी हुई पुतलियाँ इस कदर बस गई थीं कि उन्हें कोई दूसरी पसन्द ही नहीं आती थी।

हर साल बसन्त आने पर सही ओ-हीना पुतलियों को तलाशने की समस्या आ खड़ी होती। पर हर बार मार्च की तीसरी तारीख आती और माँ को मन-पसन्द पुतलियाँ मिलती ही नहीं। तब वे जल्दबाज़ी में दीवार पर टंगी राजकुमार और राजकुमारी का वह चित्र उतारतीं जिसे योशिका के पिता ने बनाया था। वे उसे कपड़े की अल्मारी के ऊपर रखतीं और एक ओर सरसों के फूल और दूसरी ओर आड़ू के फूल सजा देतीं। योशिका और माँ सालों से इसी तरह पुतली दिवस मनाते रहे थे।

योशिका के पिता की मौत के बाद ओ-हीना पुतलियाँ पाने की उम्मीद और धुंधली पड़ती गई थी। और इस साल तो योशिको दस बरस की भी हो चुकी थी।

सानको डिपार्टमेंट स्टोर में ओ-हीना पुतलियाँ देखने के अगले दिन योशिको अपनी सहेली सोहे-चान के साथ घर लौट रही थी। योशिका का स्कूल घर से पंद्रह मिनट की पैदल दूरी पर था। उसके घर के आस-पास का इलाका टोक्यो का वह हिस्सा था जिसमें हाल ही में कई मकान बन चुके थे। पर जहाँ स्कूल था वह अब भी आधा खेतिहर इलाका था।

योशिको के घर से स्कूल के आधे रास्ते में एक चौड़ा राजमार्ग था। इसके दोनों ओर शानदार दुकानें थीं। पिछले ही साल चौड़े राजमार्ग के एक तरफ बने घरों को तोड़ कर तीन मंज़िलों वाला सानको डिपार्टमेंट स्टोर बनाया गया था। सड़क के दोनों ओर रहने वालों के लिए यह बेहद सुविधाजनक जगह थी।

जो जगह कावामिनामी गिन्ज़ा कहलाती थी, वहाँ एक बड़ा बाज़ार था, और लगभग चार बजे वहाँ इतनी भीड़ होती थी कि आप धकियाए बिना चल ही नहीं पाते थे। उस जगह से इतने ऑटो और बसें गुज़रती थीं कि माँ अक्सर योशिको को उस जगह से घर न लौटने की हिदायत देती थीं। यह एक और कारण था कि योशिका उसी रास्ते से घर लौटा करती थी। गिन्ज़ा में देखने को इतनी ढ़ेरों चीज़ें जो थीं।

योशिका और उसकी सखियों को सबसे अच्छा लगता था बाज़ार। बाज़ार की इमारतों में बनी दुकानों में सजने के सामान, केक, कपड़े, मछली और तमाम अटरम-शटरम चीज़ें सजी होती थीं। ये दुकानें थीं तो छोटी, पर एक ही छत के नीचे दर्जनों दुकाने थीं। बाज़ार में लोग ऐसे भरे होते थे जैसे मघुमक्खी के छत्ते में मधुमक्खियाँ! दुकानों के बीच गलियारों का जाल था। आज इस, तो कल उस गली में घुस, दक्षिण में स्थित घर तक पहुँचने का छोटा रास्ता भी था।



घर लौटते समय सीधे घर का रास्ता पकड़ने के बदले योशिको और उसकी सखियाँ सानको डपार्टमेंट स्टोर के सामने वाली शो विंडो की रेलिंग पर झुक कर वहाँ सजाई गई सुन्दर चीज़ों को निहारती थीं। वहाँ सजी चीज़ें मौसम के हिसाब से बदला करती थीं।

पिछली क्रिसमस के समय वहाँ बड़ा-सा क्रिसमस ट्री था। उसके नीचे हर आकार के सजीले फीतों से बंधे डब्बे रखे थे। एक के ऊपर एक!

''चलो सोचें कि इन डब्बों में कुछ है भी या नहीं,'' सोहे-चान ने कहा। ''मुझे नहीं लगता कि इनमें कुछ है।''

योशिको भी यही लग रहा था कि वे खाली होंगे। उसे यह सोच अफ़सोस हुआ कि इतने सुन्दर कागज़ों और चटक लाल और हरे फीतों को इन खाली डब्बों पर लपेट कर बरबाद किया गया था।

सो उसने कहा, ''इनमें कुछ होता तो कितना अच्छा होता।''

सोहे-चान हंस दी। पर उन्होंने अंदाज़ लगाने का खेल बन्द नहीं किया। क्रिसमस के बाद सर्दियों के खेलों की चीज़ें सजाई गईं। शो विंडो के फर्श पर बर्फ दिखाने के लिए रूई बिखेरी गई थी। योशिको को अब तक वह लाल स्वेटर याद था जिसे एक मॉडल को पहनाया गया था।

तब कल से उसी शो विंडो में ओ-हीना पुतलियाँ सजाई गई थीं। हालांकि आज उन दोनों ने ओ-हीना पुतलियों की कोई बात नहीं की थी, योशिको और सोहे-चान डिपार्टमेंट स्टोर की तरफ ऐसी दौड़ीं मानो वे एक-दूसरे को पछाड़ना चाह रही हों। शो विंडो तक पहुँच वे हाँफने लगी थीं।

पुतलियाँ शान से अपनी-अपनी जगह बैठी थीं। आलों पर रखा पुतलियों का सेट तकरीबन साढ़े चार फीट ऊँचा था। उन आलों पर लाल कपड़ा बिछा था, जिन पर पुतलियाँ बैठी थीं। वे सुनहले, रुपहले, लाल और काले रंगों में सजी थीं। उनके चेहरे चमचमा रहे थे। राजकुमारी का मुकुट सनहली धातु का था, जिससे मनके लटक रहे थे।

जब भी बजरी से भरा कोई ट्रक चौड़ी सड़क से निकलता, मुकुट से लटके मनके हिलते। ऐसा लगता मानो राजकुमारी अपना सिर हिला रही हो। योशिको को जिस बात से अचरज हुआ वह था पुतलियों के साथ रखा गया घरेलू सामान। वह सब नीचे के तीन आलों में रखा गया था। सभी सामान काली लाख से पुता था। उनके ऊपर सुनहरे रंग की डिज़ाइन बनी हुई थी। वहाँ सब कुछ था। कपड़ों की अल्मारी से लेकर तमाम दूसरी चीज़ें, जिनके नाम तक योशिको नहीं जानती थी। एक शाही गाड़ी तक वहाँ थी।



"अरे उस गाड़ी को तो देखो! लगता है उसमें एक पुतली सचमें सवार हो सकती है," सोहे-चान बोली। "अगर कोई कहे कि यह ओ-हीना पुतलियों का सेट मैं तुम्हारे लिए खरीद रही हूँ, तो तुम क्या करोगी? मैं तो यह सुन बेहोश ही हो जाऊंगी।"

सोहे-चान ने अपनी आँखें बन्द की और शो विंडो के सामने लगी रेलिंग पर ऐसे लटकी मानो बेहोश हो गई हो।

यह देख योशिको लगा कि पुतलियाँ सजाई ही ऐसे गई थीं कि कोई उन्हें ख़रीद ही ले। ऐसा शानदार तोहफा किस तरह की लड़की को मिलेगा? वे किस घर की शान बढ़ाएंगी?

ये बड़ी-बड़ी पुतलियाँ उसके घर के लिए तो कुछ ज़्यादा ही शानदार थीं, योशिको ने सोचा। उसके घर का घुसते ही बना हॉल सिर्फ दो चटाइयों का था, और दो कमरे साढ़े चार और छह चटाइयों के।

सिर्फ दो जनों के लिए वह छोटा नहीं लगता था। पर जब योशिको तीन बरस की थी उसके माता-पिता और दादा-दादी, सभी साथ-साथ उसी घर में रहते थे। क्योंकि युद्ध के दौरान उनका पहले वाला बड़ा घर जल चुका था। दादा ने किसी तरह इस छोटे से घर को बनाया था। उस जगह, जो तब खेती की ज़मीन थी। जब पिता युद्ध से लौटे थे उन्होंने माँ से शादी की थी। उसके कुछ ही समय बाद दादा चल बसे थे। उसके बाद दादी शान्त हुईं। तब पिता। एक के बाद एक। अब यह घर पुराना हो चला था। जब तेज़ हवाएं चलतीं वह चर्रर-चूं की आवाज़ें करता था।

ऐसे घर के लिए इतनी शानदार पुतलियाँ ठीक नहीं होंगी। और फिर वे बहुत-बहुत मंहगी भी होंगी।

"क्या अपन अन्दर घुसें? हो सकता है अन्दर दूसरी तरह की पुतलियाँ भी हों?" योशिको ने हुलस कर पूछा।

“हाँ, चलो चलते हैं,”सोहे-चान ने उत्साह से कहा और वह योशिको से पहले ही अन्दर घुस गई।

उन्होंने पहले काउन्टर पर खड़ी महिला से पूछा कि ओ-हीना पुतलियाँ कहाँ रखी हैं। उन्हें पता चला कि वे दूसरी मंज़िल पर पीछे की तरफ मिलेंगी।

योशिको उत्तेजित थी। वे खाने-पीने के सामान वाले हिस्से को पार कर आगे बढ़ीं, जहाँ कई तरह की डिब्बाबन्द चीज़ें थीं। कई काउन्टर सैलोफेन में लिपटे केक, मीठी गोलियों आदि से लदे थे। वे सीढ़ियाँ चढ़ दूसरी मंज़िल पर गईं। इसके पहले वे स्टोर में अपने स्कूली बस्तों के साथ नहीं घुसी थीं। सो उन्हें कुछ अजीब भी लग रहा था। पर जल्द ही उन्होंने इस अटपटेपन पर काबू कर लिया और ओ-हीना पुतलियों को खोजने लगीं। लो, वहाँ थी पुतलियाँ, उनके ठीक आगे। काँच से बनी अनेक पेटियाँ, एक पर एक धरी थीं। उनमें सुनहले और लाल रंग की पोशाकें पहने पुतलियाँ सजी थीं।

ओ-हीना पुतलियाँ खुले आलों में भी सजाई गई थीं। पर उन्हें शो विंडो में सजाई गई पुतलियों जितनी बड़ी पुतलियाँ कहीं नज़र नहीं आईं। ज़ाहिर ही था कि वे ग्राहकों को अन्दर आकर्षित करने के लिए ही रखी गई होंगी।

योशिको और सोहे-चान ने एक के बाद एक पुतलियों को देखा। वहाँ दर्जनों आकार की पुतलियाँ थीं। छोटे बक्सों में राजकुमार-राजकुमारी से लेकर पहरेदार तक थे। कुछ बड़े बक्सों में सिर्फ राजकुमार-राजकुमारी ही थे।

उनके पास ही एक वृद्धा बेचने वाली युवती से मशवरा कर रही थी। “हाँ, 10,000 येन वाली, हाँ इस तरफ तरफ आएं। 10,000 वाली यहाँ हैं,” बेचने वाली कह रही थी। योशिको लगा कि वह वृद्धा ओ-हीना पुतलियों को नहीं, उनकी कीमत को चुन रही थीं।

एक सेट योशिको को बहुत ही पसन्द आया। उसकी पुतलियाँ न बहुत बड़ी थीं, न बहुत छोटी। सारी पुतलियाँ काँच के उस बक्से में समा जाती थीं। सभी के चेहरे गोल-मटोल और सुन्दर थे। उस सेट में घरेलू सामान नहीं था, जिसके बारे में माँ ने बताया था।

योशिको ने उनकी कीमत देखी। उस पर 7,500 येन की कीमत लिखी थी।

"ये कितने की होंगी?" योशिको ने पूछा।

"7,500 येन नहीं है क्या?" सोहे-चान ने कहा।

"अरे बहुत महंगी हैं ना!" योशिको बोली।

इसके तकरीबन पंद्रह मिनट बाद योशिको घर पहुँची। वह अन्दर जा माँ के पीछे बैठी। माँ उस नीली पोशाक में बटन लगा रही थीं। योशिको ने मन बना लिया था कि माँ आज कुछ भी कहें वह कतई पीछे नहीं हटेगी। अपने मन की बात कह ही देगी।

"माँ, क्या 7,500 येन बहुत ही महंगा होता है?"

माँ कुछ हैरान हो गई।

"तुम किस चीज़ की बात कर रही हो?" उन्होंने पूछा। "कीमत तो चीज़ पर निर्भर करती है ना। अगर कोई केक 7,500 का हो तो बेशक बहुत महंगा है। पर अगर यह किसी घर की कीमत है तो तुम कहोगी बहुत ही सस्ता है, कहोगी ना?"

जैसे ही माँ ने जवाब दिया योशिको अपनी गलती का अहसास हो गया। वह डिपार्टमेंट स्टोर की ओ-हीना पुतलियों के बारे में सोचने में इस कदर डूब गई थी कि उसने मान ही लिया थी कि 7,500 कहते ही माँ समझ जाएंगी कि वह ओ-हीना पुतलियों की बात कर रही है।

"मेरा मतलब ओ-हीना पुतलियों से था," योशिको ने कहा।

लगा माँ स्तब्ध हो गई हो।

"यह सस्ती कीमत तो नहीं है," वे बोलीं। तब उन्होंने योशिको का तमतमाया चेहरा देखा। उन्होंने कोमल आवाज़ में कहा, "पर योशिको अगर मुझे ऐसी पुतलियाँ मिलें जो मुझे तुम्हारे लिए बिलकुल सही लगें, तो मैं उन्हें ज़रूर खरीदूंगी। चाहे वे कितनी भी महंगी क्यों न हों। मैंने ओ-हीना पुतलियों के लिए अलग से बचत की है। पता है ना तुम्हें?"

"तो फिर खरीद दो ना माँ! सानको डिपार्टमेंट स्टोर में एक अच्छा सेट है।"

योशिको उठी और माँ के गले से लिपट गई।

"अरे योशिको सावधानी बरतो! तुम पोशाक पर चढ़ रही हो।"

योशिको फौरन माँ से दूर हटी, और उसने पूछा, "सानको डिपार्टमेंट स्टोर वाला सेट ठीक क्यों नहीं है?"

"इसलिए क्योंकि ऐसी जगहों में तड़क-भड़क वाली, घटिया पुतलियाँ होती हैं। मैं देखे बिना ही बता सकती हूँ," यह कह उन्होंने आँखें नीची कीं ओर फिर से बटन सीने में लग गईं।

बेशक डिपार्टमेंट स्टोर वाली पुतलियाँ भड़कीली थीं। पर उसने जब माँ को यह कहते सुना उसे लगा कि माँ उन पुतलियों को ही दोष दे रही हैं। उसका गला रुंध गया।

"तुम यह सब कहती हो पर . . ." योशिको ने कहना शुरु तो किया, पर वह आगे बोल ही नहीं पाई।

"अगर मैं यह सब कहती हूँ तो क्या?" माँ ने मुलायम स्वर में पूछा।

"मैं . . . मैं. . ." योशिका ज़ोर से चीखी।

"इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे घटिया लगती हैं या नहीं। घटिया और तड़क-भड़क वाली भी मेरे लिए ठीक हैं।"

"योशिको!"

योशिको ने वहाँ से भागने की कोशिश की, पर माँ ने उसे मज़बूती से पकड़ रखा था। कुछ देर योशिको माँ से चिपट कर रोई। उसने वह सब कह दिया था, जो वह अर्से से सोचती आई थी, पर कभी कह नहीं सकी थी।

माँ के पास बचपन में बेहतरीन ओ-हीना पुतलियाँ थीं। वे हमेशा बताती रहती थीं कि वे उनसे कितनी खुश थीं। योशिको को भी अपनी पुतलियाँ चाहिए थीं। पर वह घर की हालत भी समझती थी। तभी तो उसने अब तक धीरज रखा था।

जब योशिको चुप हुई, वह अपना चेहरा उठा नहीं सकी। उसने, माँ की गिरफ्त से छूटने की कोशिश की। पर माँ ने उसे ज़ोर से पकड़ रखा था। उसे माँ की आवाज़ सुनाई दी।

"योशिको क्या इस शनिवार को तुम शिंजुकू जाकर ओ-हीना पुतलियाँ देखना चाहोगी?"

"ओह," योशिको ने सिर उठा कर कहा। "सचमें?" उसने आँखे फैला कर पूछा।



"चलो मेरी रोंदू बच्ची अब हंस तो रही है," माँ ने मुस्कुराते हुए कहा। पर उनकी आँखों से लग रहा था मानो वे भी रो चुकी हों। "योशिको माँ तुम से नाराज़ नहीं है, तुम यह जानती हो ना?"

योशिको ने हाँ में सिर हिलाया।

अगले शनिवार को योशिको को माँ से शिंजुकू स्टेशन के पूर्वी द्वार पर मिलना था। क्योंकि माँ को उसी दिन एक ग्राहक की पोशाक की फिटिंग के लिए जाना था। स्कूल से घर लौट योशिको ने खाना खाया, जो माँ उसके लिए तैयार कर रखा था। तब उसने चाभी ओसारे में खुफिया जगह छिपाई, तब वह बस में बैठी।

वह पहली बार बस से अकेले शिंजुकू जा रही थी। इसलिए वह बस में बैठी पूरे समय यह सोचती रही कि वह सही-सलामत वहाँ पहुँचेगी भी या नहीं। जैसे वह माँ के साथ होने पर पहुँचा करती थी। वह स्टेशन के पास उतरी और सीधे पूर्वी द्वार की ओर बढ़ी। उसने रात को इसका कई बार अभ्यास किया था। माँ ने उसे एक नक्शा बना कर जो दिया था। माँ डाक के डब्बे के पास खड़ी थी जैसा उन्होंने वादा किया था। उनके हाथों में एक बड़ा बण्डल था। योशिको राहत से भर दौड़ी और माँ का हाथ थाम लिया।

क्योंकि शनिवार की दोपहर थी, सड़कों पर भीड़भाड़ थी। आपको किसी भी दिशा में बढ़ने के लिए कोहनियों से लोगों को धकियाना पड़ रहा था। आखिरकार वे एक बड़े से डिपार्टमेंट स्टोर पहँचे। अन्दर घुसते ही ऊँची छत और कई काउन्टर दिखे, जिन पर रंग-बिरेगे रूमाल, बटुए, कमीज़ें नज़र आईं - उनका कोई अन्त न था। योशिको को लगा मानो वह किसी महल में आ गई हो।

माँ ने सूचना काउन्टर वाली महिला से एक सवाल पूछा। तब योशिको से बोलीं, ‘‘वे पाँचवीं मंज़िल पर हैं। अपन एस्कलेटर से चलते हैं।’’ उन सचल सीढ़ियों से ऊपर जाने पर ऐसा लगा मानो इस सपनों के महल में कई सुन्दर चीज़ें उनकी ओर बढ़ने के बाद योशिको के पैरों के नीचे चली जा रही हों। शिशुओं और योशिको की उम्र की लड़कियों के लिए सुन्दर कपड़े दूसरी मंज़िल पर थे। महिलाओं के वस्त्र तीसरी पर, और चौथी मंज़िल पर थे पुरुषों के कपड़े।



“यही हमारी मंज़िल है,” माँ ने पाँचवीं मंज़िल पर पहुँच कहा।

वे सचल सीढ़ियों से कुछ कदम ही आगे बढ़े थे कि उन्होंने खुद को ओ-हीना पुतलियों ये घिरा पाया। ओ-हीना पुतलियाँ! ओ-हीना पुतलियाँ! वहाँ उतनी बड़ी पुतलियाँ थीं, जितनी बड़ी सानको डिपार्टमेंट स्टोर के शो विंडो में योशिको ने देखी थीं, और कुछ तो उससे भी बड़ी भी थीं। जिस कमरे में वे रखी गई थीं वह बेहद बड़ा था। छोटी पुतलियाँ कई कतारों में एक के ऊपर एक सजी थीं। तब कुछ कतारें उससे बड़ी पुतलियों की थीं। इन तमाम छोटी-बड़ी पुतलियों के बीचोंबीच, जहाँ सब देख सकें, एक शानदार सेट था। योशिको तक को पता लग गया था कि वह सेट सानको डिपार्टमेंट स्टोर वाले सेट से कहीं ज़्यादा शानदार था।

उसके सामने बाकी सब सेट फीके लग रहे थे। “पता नहीं इन जगहों में ऐसी पुतलियाँ क्यों रखी जाती हैं जो बिलकुल एक-सी दिखती हैं?” योशिको की माँ ने पुतलियों को ध्यान से देखते हुए कहा। वे योशिको का हाथ पकड़े हुए थीं। “क्या तुम्हें कोई पुतली पसन्द आ रही है?”

माँ ने फिर से पुतलियों को ध्यान से देखा। तब वे राजकुमार-राजकुमारी के एक जोड़े के पास रुकीं। योशिको को भी लगा कि उनके चेहरे सुन्दर हैं।

पर माँ ने जल्द ही ना में सिर हिलाया और यह फुसफुसाते हुए आगे बढ़ीं, “ये तो एकदम जड़ लग रही है!”

कुछ आगे बढ़ने पर माँ को राजकुमार-राजकुमारी का एक और सेट दिखा। उन्होंने कुछ देर उसे भी ध्यान से देखा।

पर तब माँ ने योशिको का हाथ खींचा और यह कहते आगे बढ़ीं,“इनके साथ की पुतलियाँ तलाश कर उनका सेट बनाना बहुत ही मुश्किल होगा। योशिको तुम ही बताओ कि तुम्हें कौनसी सबसे अच्छी लग रही हैं। इसका मतलब यह नहीं कि मैं उन्हें ख़रीद ही लूंगी। पर इससे कम से कम यह तो पता चल जाएगा कि तुम्हें किस तरह की पुतलियाँ पसन्द हैं।”

माँ कुछ हड़बड़ी में बोल रही थीं, मानो जो वे देख रही थीं, उससे कुछ अलग ही सोच रही हों।

योशिको को समझ ही नहीं आया कि वह कहे तो क्या। इतनी सारी पुतलियों में से किसीको भी चुनना बड़ा ही मुश्किल था। यह कहना कठिन था कि “मुझे वह पसन्द है!” उसे तो वहाँ रखी सारी पुतलियाँ बड़ी अच्छी लग रही थीं, पर दूसरी तरफ रखी भी पसन्द आ रही थीं।

सो उसने सानको डिपार्टमेंट स्टोर वाली वृद्धा की बात सोची, जिसने कहा था “10,000 येन वाली पुतलियों में से एक!”

योशिको चुप इसलिए रही क्योंकि उसकी माँ उससे भी ज़्यादा मुस्तैदी से सही पुतलियाँ तलाश रही थी। उसके चेहरे पर संकल्प का भाव था।

योशिको थकने लगी थी। माँ के हाथ में थामा उसका हाथ पसीने से गीला हो चला था।

तकरीबन तीस मिनट तक इधर-उधर देखने के बाद उन्होंने स्टोर के चाय घर में जाने का फैसला किया। ताकि वे कुछ खा और सुस्ता लें।

“जो भी इच्छा हो मंगवा लो,” माँ ने योशिको को कहा। योशिको ने गरमागरम केक, संतरे का रस और फलों की प्याली मंगवाई। माँ ने आइसक्रीम खाना तय किया।

वे आराम से बैठे अपने खाने का इन्तज़ार कर रहे थे। माँ ने घड़ी देखी और पूछा, "क्या अपन एक और दुकान में चलें? जैसा तुम चाहोगी वही करेंगे।"

योशिको को समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या कहे। माँ ने अपनी आइसक्रीम खाते हुए कहा, "योशिको, क्या तुम मुझे पुतलियों के बारे में सोचने के लिए कुछ और समय दोगी? अगर मुझे कुछ बेहतर नहीं सूझेगा तो मैं उस खड़े राजकुमार-राजकुमारी का जोड़ा खरीद दूंगी। हम उससे तब तक काम चला लेंगे, जब तक हमें सही सेट नहीं मिल जाता। क्या यह ठीक रहेगा?"

योशिको हैरान हो चुपचाप माँ को देखती रही। उसे अहसास हो गया था कि माँ उससे पहले से कहीं ज़्यादा गंभीर हो बात कर रहीं थीं।

"मैं दरअसल तुम्हें अपनी ओ-हीना पुतलियाँ देना चाहती थी। मुझे वे अब तक इतनी अच्छी तरह से याद हैं। कभी तो लगता है कि मैं हाथ बढ़ा लूं तो उन्हे छू सकूंगी। और तब उन्हें दिखा तुमसे कहूँगी 'देखो ये रहीं मेरी पुतलियाँ'," माँ कुछ उदासी से मुस्कुराईं। "पर वे तो अब हैं नहीं। पर फिर भी मैं तुम्हें ऐसी पुतलियाँ देना चाहती हूँ जो हम दोनों को खुश करें। तुम दस की हो चुकी हो, तुम्हारे पास राजकुमार-राजकुमारी के चित्र से कुछ बेहतर होना चाहिए।"

योशिको फलों का प्याला खत्म कर, अब गरम केक खाने लगी थी।

"योशिको पता नहीं तुम मेरी बात समझ भी रही हो या नहीं। क्या तुम्हें मेरी पुतलियों और अभी देखी पुतलियों में फर्क दिख रहा है या नहीं। पर मैंने तुम्हारे लिए कभी एक ब्लाउज़ तक यह सोचे बिना नहीं बनाया है कि कुछ भी चलेगा।

मैं पहले यह सोचती हूँ कि तुम पर क्या फबेगा, और सबसे अच्छा क्या रहेगा। यह सब सोच कर ही मैंने तुम्हारे कपड़े बनाए हैं। इसलिए नहीं कि तुम देश की सबसे सुन्दर बच्ची हो। बल्की इसलिए कि क्योंकि तुम, तुम हो। समझ रही हो ना? मुझे लगता है कि मेरी नानी को भी ठीक ऐसा ही लगा होगा, जब उन्होंने खास मेरे लिए बनवाई गई ओ-हीना पुतलियाँ दी थीं। बेशक वे दुनिया की सबसे सुन्दर पुतलियाँ नहीं थीं। पर वे उन कोमल भावनाओं के साथ बनवाई गई थीं, जिनका बयान ही नहीं किया जा सकता। उनको रखने वाले डब्बों पर उकेरे गए शब्दों तक का खास अर्थ था। वे मुझे कुछ कहते थे।

"अब घर में केवल हम दोनों ही हैं। मैं पोशाकें सीती हूँ, जो मैंने पहले सपनों तक में नहीं सोचा था। हो सकता है कि तुम सोचो कि इसका ओ-हीना पुतलियों से क्या लेना-देना है। पर दरअसल है। जब मैं अपनी पुतलियों की देखभाल करती थी तो मैं प्यार और सावधानी बरतती थी। वह भावना आज मेरी मदद कर रही है। मुझे लगता है कि लोग मेरी बनाई पोशाकों से खुश होते हैं। वे कहते हैं कि वे स्टोर में बिकने वाली पोशाकों से कहीं बेहतर हैं। और इस काम की बदौलत हम दोनों का गुज़ारा चल रहा है। क्या तुम्हें समझ आया कि मैं क्या कहना चाह रही हूँ?"

योशिको ने हाँ में सिर हिलाया। इसलिए नहीं कि वह माँ की बात समझ गई थी। बल्की इसलिए क्योंकि उस लगा कि माँ पूरी गंभीरता से अपने दिल की बात कह रही थी। इसके अलावा पास की मेज़ पर बैठी वृद्‌धा अपनी ओसूशी खाते हुए उनकी बात सुन रही थी। योशिको को लग रहा था कि माँ जल्दी से चुप हो जाए।

“माँ, ठीक है मैं तब तक इन्तज़ार कर लूंगी, जब तक तुम्हें सही पुतलियाँ नहीं मिल जातीं,” योशिको ने कहा।

वे रात के खाने के लिए स्ट्रॉबैरी खरीद स्टोर से बाहर निकले। घर लौटते समय योशिको को लगा कि वह खुद को हल्का महसूस कर रही है। माँ का चेहरा भी पहले से खुश और चमकदार लग रहा था।

जब वे घर पहुँचे उन्हें अपने डाक के डब्बे में अखबार के साथ एक पोस्टकार्ड भी मिला।

“ओह, फिर से कक्षा-मिलन की खबर है,” माँ ने जवाब दिया।

“कब है यह मिलन?” योशिको ने पूछा।

“कल से सप्ताह भर बाद। पता नहीं ऐसी बैठकों के लिए लोगों के पास समय कैसे निकल आता है। इस बार की बैठक शोबीयामा-सान के घर में हो रही है।”

“शोबीयामा-सान के घर? आपको ज़रूर जाना चाहिए माँ,” योशिको ने कहा।

योशिको को याद आया कि जब वह छोटी थी उसे शोबीयामा-सान से लाड़ लड़वाना अच्छा लगता था। पर जैसे-जैसे वह बड़ी होती गई माँ काम में इस कदर उलझ गईं कि अपनी दोस्तों से मिलने तक का समय नहीं निकाल पाती थीं।।

“मैं नहीं जाऊँगी,” माँ ने हंस कर कहा। “मैं अपनी सहेलियों से इतने अर्से से नहीं मिली हूँ कि मुझे नहीं लगता कि हम ठीक से बातचीत भी कर पाएंगे। और फिर यह मिलन इतवार को है, जो तुम्हारे साथ बिताने का दिन होता है।”

“तुम्हें जाना चाहिए माँ। मैं घर पर रह उसकी देखभाल करूंगी,” योशिको ने इतनी दृढ़ता से कहा कि उसे खुद को भी अचरज हुआ।

योशिको को लगा कि वह अचानक बड़ी हो गई है। असल में वह माँ के प्रति मेहरबान बनना चाहती थी।

“खैर! मैं सोचूंगी,” माँ ने जवाब में कहा।

इतवार की बैठक वाले दिन, मौसम खुशनुमा था।

“मेरी कक्षा के मिलन के लिए यह बिलकुल अच्छा दिन है,” माँ ने खुशी से कहा।

योशिको ने सोचा कि यह कितने दुख की बात है कि उसकी माँ को काम छोड़ बाहर निकलने के मौके कितने कम मिल पाते हैं। आज माँ के चेहरे पर एक खास चमक थी। वे अपनी सबसे सुन्दर पोशाक पहने थीं। और एक दिन पहले वे बाल भी बनवा कर आई थीं।

योशिको का दोपहरी का खाना और उसके और सोहे-चान के लिए कुछ नाश्ता बना, माँ दस बजे खुशी-खुशी घर से निकलीं। वे लौटते वक्त रात के खाने का सामान लेती आने वाली थीं। योशिको को कुछ भी करने की ज़रूरत नहीं थी।

पर माँ अपने वादे के हिसाब से पाँच बजे नहीं लौटीं। अंधेरा हो चला था और सोहे-चान अपने घर लौट गई थी। योशिको को बन्द घर में अकेलापन सताने लगा था। तभी उसने माँ के तेज़ी से आने की आहट सुनी।



योशिका उछल कर खड़ी हुई और दरवाज़े की ओर भागी। पर दरवाज़ा अचानक खुल गया।

"अरे बेटी! माफ करना इतनी देर हो गई। तुम भूखी हो ना?"

माँ की साँस फूल रही थी, वे हाथ में बड़ा सा बण्डल लिए थीं। पर उनकी आँखें मुस्कुरा रही थीं। योशिको ने अर्से से उनकी आँखें में ऐसी चमक नहीं देखी थी। यह सबूत था कि अपनी सहेलियों से मिल कर उन्हें मज़ा आया था।

"हाँ मैं भूखी हूँ," योशिको ने जवाब दिया। "क्या आपको मज़ा आया?"

"अरे बहुत ही मज़ा आया। मेरा दिन अच्छा गुज़रा!" अन्दर घुसते हुए वे बोलती गईं। उन्होंने बण्डल रखा, अपना कोट उतारा। "मैं फौरन खाना तैयार करती हूँ। योशिको अच्छा हुआ कि मैं आज गई।

दोस्तों का होना, उनसे मिलना कितना अच्छा होता है। मैं इतने अर्से से गई ही नहीं थी फिर भी मेरी सहेलियों ने शोरगुल के साथ मेरा स्वागत किया - ठीक वैसे जैसे स्कूली लड़कियाँ करती हैं। उनमें से ज़्यादातर की शादियाँ हो चुकी हैं, कुछ तो शिक्षिकाएं भी बन चुकी हैं।"

रसोई में खाना बनाते और उसे खाते समय भी माँ अपनी बैठक के बारे में बोलती रहीं। उनके शब्द बिना रुके बहते जा रहे थे। इतने सालों बाद अपनी सहेलियों से मिलना उन्हें कितना अच्छा लगा होगा! लग रहा था मानो वे फिर से हाई स्कूल की छात्रा बन गई हों।

"हमने पूरा दिन मज़ा करते बिताया है, सो अब मैं कुछ काम कर लेती हूँ, योशिको तुम अपना बिस्तर बिछा कर मुझसे पहले ही सो जाओ," उन्होंने खाने के बाद कहा।

योशिको बिस्तर में लेटी पढ़ती रही। उसे दूसरे कमरे से कागज़ की सरसराह सुनाई देती रही।

"माँ ज़रूर कोई पैटर्न काट रही हैं," योशिको ने सोचा, और जल्दी ही सो गई।

आखिरकार फरवरी खत्म हुआ। मार्च का महीना शुरू हुआ। योशिको के साथ बड़े डिपार्टमेंट स्टोर जाने के बाद से माँ ने ओ-हीना पुतलियों का कोई ज़िक्र नहीं किया था। पर योशिको को इससे कोई शिकायत नहीं थी। उस दिन माँ से हुई बातचीत के बाद योशिको और माँ का रिश्ता और मज़बूत हो गया था। योशिको अब माँ की हर बात सुनने-मानने लगी थी। अब माँ को बाहर जाते देख और लौट कर देर रात तक काम करते देख उसे खुशी होती थी।



मार्च की तीसरी तारीख को जब योशिको स्कूल के लिए निकल रही थी माँ ने कहा, "मैं आज दोपहर बाहर जा रही हूँ। पर कुछ नाश्ता तैयार करके जाऊँगी। तुम लौटते समय आज अपनी कुछ सहेलियों को साथ क्यों नहीं ले आतीं। सोहे-चान और दो-तीन को चाय पर बुला लो।"

योशिको को बड़ा अचरज हुआ। माँ ने, जो हमेशा कहा करती थीं कि वे बेहद व्यस्त हैं, इसके पहले कभी ऐसा नहीं कहा था। पर हैरान योशिको कुछ पूछती इसके पहले वे मुड़ कर रसोई में घुस गईं।

उस दिन योशिको स्कूल से सीधे घर लौटी। उसने सानको डिपार्टमेंट स्टोर या बाज़ार पर कोई ध्यान नहीं दिया। सोहे-चान यह वादा कर अपने घर गई कि वह अपना बस्ता रख जल्दी ही वापस आएगी।

जब योशिको ने ओसारे के ढ़ीले बोर्ड के नीचे से चाभी निकाली, उसका दिल अचानक तेज़ी से धड़कने लगा। ना जाने क्यों अन्दर चारों ओर शान्ति थी। फिर भी उसे लग रहा था माने पल भर पहले कोई अन्दर था, जो भाग कर छिप गया है।

तब उसने गौर किया कि जूतों की अल्मारी पर चैरी और सरसों के फूल करीने से सजे हुए हैं। उनकी खुशबू ने ही हवा में उत्तेजना फलाई थी। इसका मतलब था कि माँ को याद रहा था।

इस बार योशिको के घर में भी पुतली दिवस मनाया जा रहा था। उसने जल्दी से अन्दर का दरवाज़ा खोला। दो चटाई वाले कमरे में कोई नहीं था। उसने अगले कमरे का दरवाज़ा भी सरकाया। उस साढ़े चार चटाइयों वाले कमरे में भी कोई नहीं था।

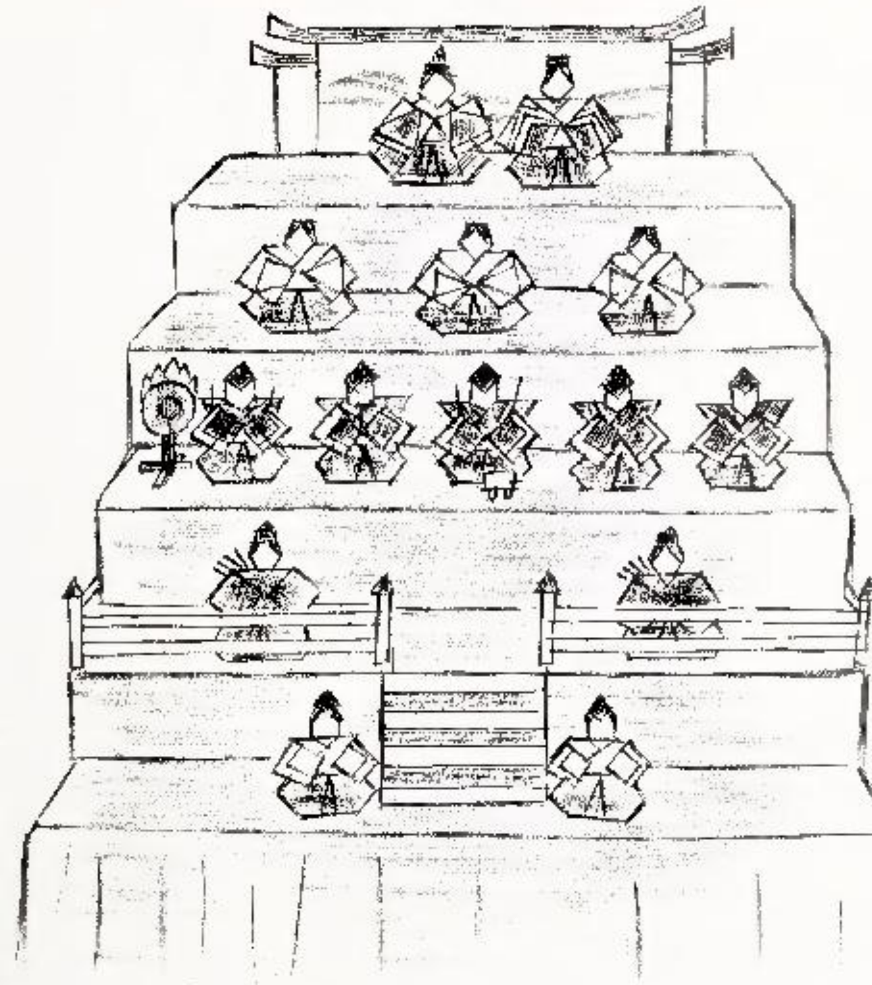


हमेशा की तरह रसोई का दरवाज़ा खोल नाश्ता करने के बदले योशिको पहले छह चटाइयों वाले कमरे में गई। क्यों गई इसकी कल्पना वह बाद में सोच कर भी नहीं कर पाई। दरवाज़ा खेलते ही उसे चटक रंगों की छोटी-छोटी चीज़ें नज़र आईं - लाल, सफेद, सुनहला, और काला। योशिको मंत्रमुग्ध खड़ी की खड़ी रह गई।



ओ-हीना पुतलियों के लिए आलों का सेट लगा था। आकार में वह काफी छोटा था। लाल कपड़े से ढ़के पाँच आले वहाँ रखे थे। वे गत्तों के डब्बों को एक के ऊपर एक रख कर बनाए गए थे। सबसे ऊपरी आले में राजकुमार और राजकुमारी एक सुनहले स्क्रीन के सामने बैठे थे। उनके नीचे तीन सेविकाएं थीं। तब थे पाँच साज़िन्दे, उनके नीचे दो मंत्री और तब पहरेदार।

पूरा दरबार वहाँ था। पर वे सब माँ की लकड़ी से तराश कर बनाई गई ओ-हीना पुतलियों से अलग थे। ये पुतलियाँ रंग-बिरंगे कागज़ों को मोड़ कर बनाई गई थीं!



योशिको का मन तो खुशी से चीखने का हुआ। पर उसने खुद को रोका और आहिस्ता से ओ-हीना पुतलियों की ओर बढ़ी। आगे की ओर झुक उसने उन्हें पास से देखा। कितनी खूबसूरती से बनी थीं ये पुतलियाँ। हालांकि वे कागज़ से बनी थीं और उनकी आँखें और नाक नहीं थी, फिर भी हरेक अपने रूप और आकार से अपना व्यक्तित्व जता रही थी।

राजकुमारी ने सुन्दर कपड़े पहने थे। उसकी बारह सतहों वाली पोशाक की बाँहें पंख जैसी लग रही थीं। उसके हाथ गोद में धरे थे। राजकुमार का सिर और कंधे ऊँचे तने हुए थे। पाँचों साज़िन्दे अपने साज़ बजाने में मशगूल लग रहे थे। और पहरेदार इतने चौकन्ने, कि ज़रूरत पड़ने पर पल भर में हाज़िर हो जाएं।

पर योशिको ने दरवाज़ा खेलते वक्त जिस चीज़ पर ध्यान ही नहीं दिया था, वह था कपड़े से ढ़का एक छोटा बक्सा, जो आलों के पास रखा था। इस बक्से पर लकड़ी से तराश कर बनाए गए राजकुमार और राजकुमारी थे। वे अकेले चुपचाप खड़े थे। राजकुमारी के बाल उसके कंधों तक लटके थे और उसके हाथ छाती के गिर्द। राजकुमार की बाँहें उसके दाएं-बाएं नीचे की ओर थीं। वह आसमानी रंग का चुन्नटदार लम्बा चोंगा और सुनहला मुकुट पहने था। दोनों के कपड़ों पर गुलदाउदी के फूलों का डिज़ाइन बना हुआ था। उनके चेहरो पर स्वप्निल भाव था। उनकी आँखे और नाक सूत से पतले थे, जिन्हे बारीक चिमटी से पकड़ा जा सकता था।

माँ की ओ-हीना पुतलियों के चेहरे भी ठीक ऐसे ही रहे होंगे, योशिको ने सोचा। पर कागज़ की रंग-बिरंगी पुतलियाँ भी योशिको को उतनी ही पसन्द आ रही थीं, जितनी लकड़ी वाली। शायद उनसे भी ज़्यादा।

आलों के सामने पुतलियों के लिए हीरे के आकार में चावल से बने केक थे। और उनके ही पास रखा था एक सफेद लिफ़ाफा जिस पर "योशिको के लिए" लिखा था। उसने जल्दी से लिफ़ाफे में रखी चिट्ठी निकाली और पढ़ीः

प्यारी योशिको,

क्या तुम्हें अपनी ओ-हीना पुतलियाँ अच्छी लगीं? आलों में सजी सारी पुतलियाँ मैंने बनाई हैं। वे मोड़े जा सकने वाले कागज़ से बनी हैं, जो ज़्यादा छेड़छाड़ करने पर फट सकती हैं। उनके पास जो लकड़ी की पुतलियाँ हैं वे शीबायामा-सान की तरफ से हैं। उन्होंने हमारी बैठक के दिन मेरी ओ-हीना पुतलियों की कहानी सुनने के बाद तुम्हें ये पुतलियाँ देने को कहा।

मैंने उनसे पूछा कि वे उस कलाकार का नाम भी बताएं जिसने उन्हें तराशा है। अगर वे तुम्हें पसन्द आती हैं, तो हम धीरे-धीरे पुतलियाँ जोड़ कर पूरा सेट बना सकते हैं। मुझे लगता है कि जब तक कागज़ की पुतलियों का रंग उड़े और तुम खुद माँ बनो, उसके पहले हमारे पास लकड़ी से बना पूरा सेट होगा, घरेलू सामान समेत।

मैंने मीठी सेम और चैरी की पत्तियों के जो डम्पलिंग बनाए हैं उन्हें सोहे-चान और अपनी दूसरी सहेलियों के साथ खाना। वे थालियों वाली अल्मारी में रखे हैं।

मां

योशिको की आँखें अचानक भर आईं। वह जल्दी से रसोई में गई और उसने चाय की केतली चूल्हे पर चढ़ा दी।

उस शाम माँ ने पेशाकों की डिज़ाइन और कपड़े काटने का तख़्ता बाहर रखा और दोनों बिस्तर ओ-हीना पुतलियों के सामने लगाए। पुतलियों से सजे आलों के ऊपर एक छोटी बत्ती जल रही थी।

"न जाने क्यों ओ-हीना पुतलियों के सामने सोना मुझे पुराने समय की याद दिला रहा है," माँ ने कहा। "जब भी ओ-हीना पुतलियाँ सजाई जाती थीं मुझे आधी रात तक नींद ही नहीं आती थी। मैं तमाम बातें सोचती रहती थी।"

"माँ मेरे लिए कागज़ की पुतलियाँ ही काफ़ी हैं," योशिको ने माँ से कहा।

"अरे नहीं, जब लकड़ी से तराशी गईं पुतलियों का पूरा सेट तुम्हारे पास होगा तब देखना। सच बहुत ही मज़ा आएगा। क्या तुम उसकी कल्पना नहीं कर सकती? मैं किसी दिन उस कलाकार से मिलने जाऊँगी, जो इन्हें बनाता है। उससे बात कर पक्की योजना बना लूंगी।

"पर मैं इन कागज़ की पुतलियों को नहीं फेंकूंगी," योशिको बोली।



"बेशक मत फेंकना, पर तुम्हें उनका अच्छे से ख़याल रखना होगा। मैंने उन्हें बनाने में बहुत ही मेहनत की है। कितनी अजीब बात है ना, कि जिस योशिको के पास एक भी पुतली नहीं थी आज वह कितनी रईस है।"

माँ खुशी से हंस पड़ीं। उनकी हंसी की आवाज़ ने नगाड़चियों के हाथ मानो और ऊपर कर दिए। योशिको तो यह भी लगा कि वह बाँसुरी की हल्की आवाज़ भी सुन पा रही है।

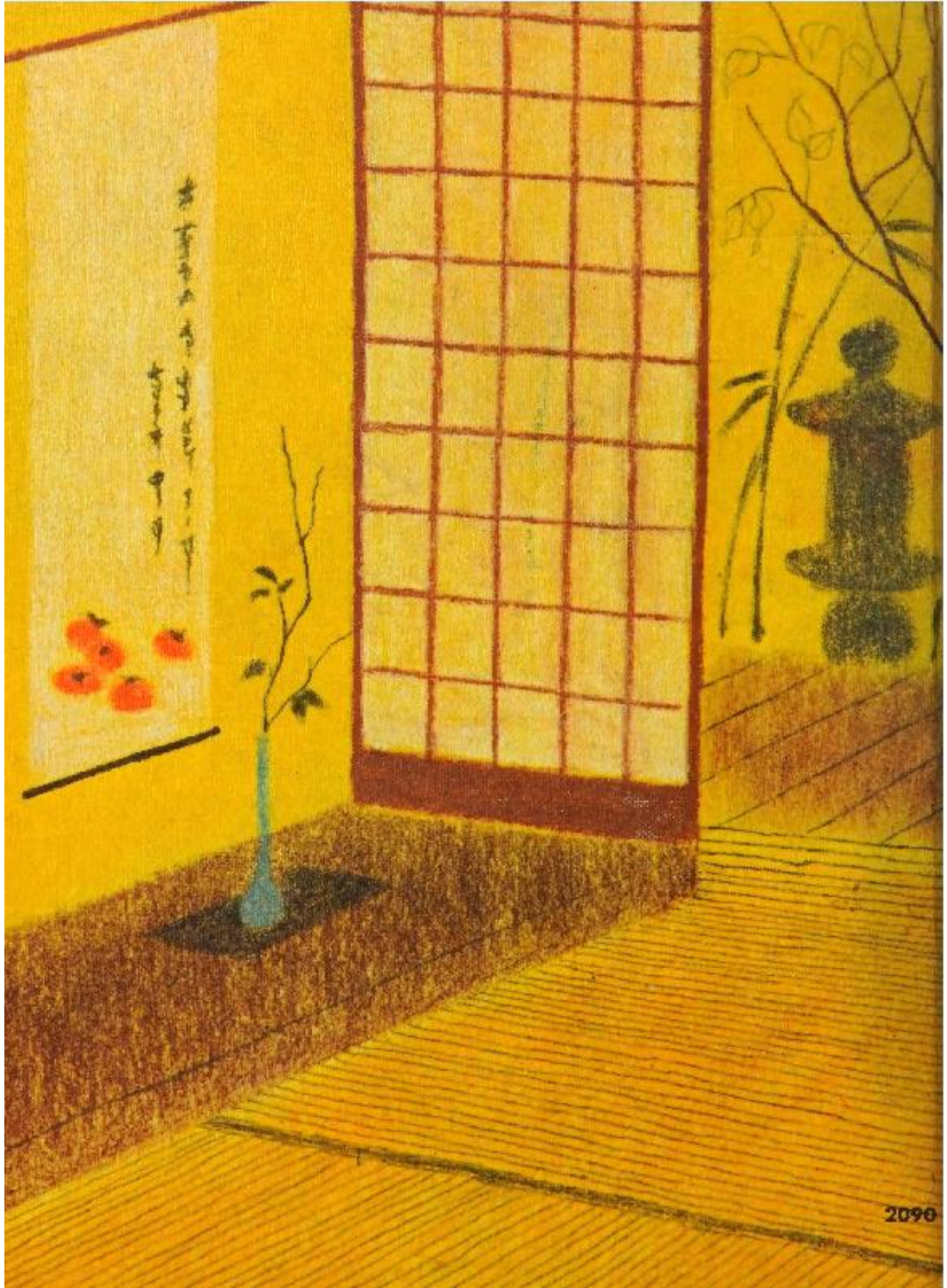
"मज़े की बात यह है योशिको," माँ ने आगे जोड़ा, "तुमने ही कक्षा मिलन में जाने पर ज़ोर दिया था। हम इसलिए ही इस बार पुतली उत्सव मना सकें हैं।"

"सच?"

"हाँ, उस दिन शीबायामा-सान के घर में जब मैं घुसी उनके कमरे के आले में पता है क्या था। लकड़ी के बने राजकुमार और राजकुमारी!

वे मानो मेरा ही इन्तज़ार कर रहे थे। वे चुपचाप मेरी ओर देखते रहे। इसलिए मैं बोल पड़ी, ‘ओह!’ तब सभी ने अपने बचपन की बातें की। सब बताने लगीं कि वे भी बचपन में बेसब्री से पुतली दिवस का इन्तज़ार किया करती थीं।

“हमने तुम्हारे बारे में भी बात की। ताकानो-सान कागज़ से चीज़ें बनाने में माहिर हैं। हालांकि वे यह भूल चुकी थीं कि कागज़ से ओ-हीना पुतलियाँ कैसे बनाई जाती हैं। पर उन्हें धीरे-धीरे याद आ गया। आख़िरकार उन्होंने एक नमूना बना ही डाला। वह तो मुझसे भी ज़्यादा उत्साहित थी। उन्हें वह दुकान भी पता थी जहाँ मुकुट के लिए सुनहरा कागज़ मिलता था। वह जबरन मेरे साथ कागज़ ख़रीदने निहोमबाशी की उस दुकान पर चली।”


2090